बंदिश

संगीत प्रवाही आकारतत्व है ।
चित्रफलक की भांति वह स्थिर नहीं ।
रागसंगीत प्रवाही आकारतत्व है, जहाँ स्वरप्रवाह की धराएं कहीं सिकुड़ती हैं, तो कहीं फैलती हैं, पर लौटकर पुनश्च उगमस्थान पर आकर बहने लगती हैं । बहकती नहीं ।

राग का चलन तथा ताल के आवर्तन पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं, गतजन्म के पुण्यसंचित पर भी । राग के भीतर के स्वरों के आपसी रिश्ते होते हैं । सप्तक में स्वरों का अपना आना जाना, चाल चलन होता है ।

गाते समय यह सब कायम रखने से ही राग प्रत्यक्ष में रूप धारण करता है । इन सब तत्वों के संकेत जिस स्वररचना में निहित होते तो हैं, पर जिनकी पूर्ती संपूर्ण रूप में नहीं मिल पाती, उसे मूलतः हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के परिवेश में बंदिश कहा जा सकता है ।

साकारित होने जा रहे गायन को, उसके नाद—लय—रागरूप को लेकर समूचे सौंदर्यतत्व को संकेतरूप में बंदिश के माध्यम ही से सुरक्षित रखा जा सकता है । बंदिश के पट उपज अंग से खोलकर ही उसमें सुप्त सौंदर्य की पूर्ण अनुभूति प्राप्त होती है, उसमें सुप्त संकेतों की संदिग्धता हटती है, पिया मिल जाते हैं — कभी सांगीतिक यथार्थ की नापतौल करते हुए, तो कभी स्वरजन्य किसी और ही भाव में विभोर ।

शब्दकोशों में 'बंदिश' के बहुत ही मार्मिक एवं दिलचस्प अर्थ प्राप्त होते हैं । पाबंदी अथवा अनुरोध इक ओए, तो योजना अथवा निबंध दूसरी ओर ।

प्राथमिक तौर पर बंदिष के घटक हैं :

१) रागवाचक स्वरसंगती
2) लयतत्व : इसमें निहित है लयकारी, लयदारी तथा syncopation — जिसे हिंदी में प्रतिशब्द नहीं है।
३) शब्द : इसमें निहित है नादार्थ, नादमयता, आघातक्षमता, उच्चारण में सुप्त अभिनय तथा नृत्यमयता एवं भाषिक अर्थ ।

उच्चारण की विविधताएं, विशिष्ठताएं भी बंदिश के गायन में अपना रंग पैदा करती हैं । शब्दों के भाषिक अर्थ के अलावा स्वर एवं व्यंजनों के उच्चरण में आघात तथा नादार्थ निर्माण करने की क्षमता होती है । सृजनात्मक ढंग से इस उपलब्धी को गायकोंने उपयोग में लिया है ।

अगर अच्छा काव्य, खास तौर पर वर्तमान सामाजिक तथा संस्कृतिक संवेदनाओं को मुखर करता हो तब सांगीतिक यथार्थ में चार चांद लगा सकता है । अपितु संगीत के भ्रष्ट तथा अनाकलनीय उच्चरों से महान कलाकारों से संगीत का अर्थ ग्रहण करने में कोई क्षति नहीं पँहुचती । फिर भी हमें यह ज्ञात होना चाहिये कि उत्तर हिंदुस्तान की विपुल बोलीभाषाओं के वैविध्य ने बंदिशों का काव्यपक्ष तथा भावपक्ष बहुत संपन्न बनाया है ।

पुनश्च बंदिशों के घटकों की ओर मुडते हैं ।

१) रागवाचक स्वरसंगति
२) लयतत्व
३) और शब्द

यह तीन घटक उनकी पूरी संपन्नता और व्याप्ति लिये हुए, विभिन्न मात्रा में (proportion में) बंदिशों में अंतरभूत होते हैं। अलग अलग घराने तथा प्रतिभाएं ऊपर निर्दिष्ठित घटकों का अपना अनोखा रसायन (compound) बांधते हैं। (राग रासोई पागड़ी बंधे सो बंध जाए)। जिस मात्रा में यह मूलघटक उपयोग में लाए जाते हैं (बंदिश में) उसी से ही कलाकार का सौंदर्यशास्त्र सिद्ध होता है। इन घटकों के विभिन्न मिश्रणों ही से एक राग में विभिन्न तथा उनेक बंदिशें होने को मतलब, तथ बंदिशों को अपना मूल्य प्राप्त होता है, अस्तित्व प्राप्त होता है। एक राग में अनेक बंदिशें होती हैं, अपने पृथक बिभ्रम लिये हुए। अपने विशिष्ट अंदाज़, खूबसूरतियां संजोए हुए।

अलग अलग बंदिशें, याने अलग अलग किस्म का सौंदर्यधन जहां सुरक्षित हैं ऐसी मंजुषाएं, संदूकें... यह सौंदर्यधन अभिमुक्त करने के लिये प्रतिभा की कूंजी आवश्यक होती है। साथ ही उस धन का इस्तेमाल सही तरीके से करने के लिये आवश्यक्ता होती है प्रज्ञा की जो कि तालीम से संस्कारित होती है।

यहां इस मान्यता के भरोसे हम हैं कि विशिष्ट बंदिशों में जो विशिष्ट रागरूप या सौंदर्यतत्व संकेतरूप में बांध पकड रखा है, उसकी उपज अंग से बढ़त करना, उस सौंदर्य के विभिन्न भंगीमाओं की वृद्धी करना, साथ ही मूल स्वरवाक्यों के सूत्र को गहरा करना, उस लंगर से ना बहकते हुए प्रतिभा की नैय्य को रागप्रवाह में रखना, यही सबकुछ गायक का मकसद होता है।

रचना 'बंदिष' यह नामाभिधान अथवा संज्ञा के पात्र हो, इसलिये आवश्यक गुण इस प्रकार हैं :

१) निहित राग और ताल में नवनिर्माण तथा व्यक्तिगत संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अविभाज्य विशिष्टता मानी गई है। रचना में यह गुंजाइश बरकरार होनी चाहिये। इसी तत्व को आगे बढाएं तो यूं भी कहा जा सकता है कि बंदिश तो सही बंदिश है जो हर घराने के तथा विभिन्न गायकों के अंदाज़ को, प्रतिभा के पट को सहजता से ओढ ले।

२) अच्छी बंदिश को परंपरा का, पारंपारिक बंदिशों का संदर्भ होता है। वे कभी सांगीतिक सवाल का जवाब होती है। प्रतिभा को प्रतिभा ही द्वारा दी हुई प्रतिक्रिया, दाद होती है।

३) रचना का मुखड़ा रागवाचक होना चाहिये। बंदिश में जो रागरूप निहित है, intended है, उसमें अवगाहन करने की क्षमता, उस तरफ़ संकेत , उस दिशा का आमंत्रण मुखड़े में होना चाहिये।

४) मुखड़ा लचीला होना चाहिये। पता नहीं 'उपज' के लिये 'improvisation' कितना पर्याप्त शब्द है, पर मुखडे में गायक की प्रतिभा को, उपज को आवाहन होना चाहिये।

५) यह देखा गया है कि अच्छी बंदिश में दोहराने के लिये, आवृत्ती करने के लिये ज़्यादा स्वरसमूह य शब्दसमूह (units) पाये जाते हैं। ऐसे समूहों का व्यक्तित्व मिलनसार होता है। वे सहजतासे एक दूसरे में विलीन होते हैं।

६) बंदिश में निहित विशिष्ट सौंदर्य की वृद्धी करने के लिये, उस अंग से उपज करने के लिये आवश्यक तर्कशास्त्र का संकेत बड़ी महीन सूक्ष्मता से बंदिश में प्राप्त होता है। संदिग्ध होता है यह संकेत। उसमें चेतावनी होती है राज़ को राज़ न रहने देने की। तब ही वह उद्युक्त करता है कि बार बार उसे टटोलें, परखें।

७) Film song की भांति बंदिष अंतिम सत्य नहीं है, product नहीं है। It is the beginning of a process.

<u>बंदिशों का महत्व :</u>

१) ख्याल genre के पूरे इतिहास का सबूत और उसका विश्लेषण बंदिशों द्वारा ही प्राप्त होता है।

२) कलाकार के संवेदना को राग का जो दृष्टिकोण या सौंदर्यतत्व अनुभव होता है, उसे सुरक्षित रखने के लिये आवश्यक माध्यम बंदिश ही है।

३) बंदिशों द्वारा ही यह वीरासत शिष्य प्रशिष्यों को प्रदान की जाती है।

४) विभिन्न शैलियों का तुलनात्मक अभ्यास बंदिशों को ध्यान में न लेते हुए असंभव है।

५) बंदिशों द्वारा ही विशिष्ट घरानों की छबी, discipline, उनका अपना सौंदर्यशास्त्र ज्ञात होता है।

६) विशिष्ट गायकों के सांगीतिक व्यक्तिमत्व की झांकी, झलक बंदिशों के माध्यम ही से मिलती है। मिसाल के तौर पर,

अ) कौन कौन कलाकारों ने राग को कैसे कैसे देखा?
ब) शब्दों को कैसे ध्वनित किया
क) गायकों की कहन, तथा उच्चरणों की अंगभूत खासीयतें क्या हैं?

आदि बातों का पता बंदिशों से ही चलता है।

७) तालक्रिया, लयक्रीडा, ताल का treatment, अलग अलग छंद, उनकी मालिकाएं, विभिन्न मात्राओं से उठनेवाले मुखड़ों से संभव होनेवाले खानापूरी के अंदाज़, लय की काटछाट आदि बातों का प्रमाण बंदिशों द्वारा ही प्राप्त होता है।

<u>बंदिश का कार्य :</u>

सौंदर्य की अनुभूति को साकार रूप में मूर्त करना एवं उसे सुरक्षित रखना बंदिश का कार्य है।

मज़ाक की तौर पर... बुरा या ग़लत गाने के लिये भी आवश्यकता बंदिश ही की होती है।

— सत्यशील देशपांडे